सेवा का जज्बा

अभिमान नाम के शब्द से,
मानव भ्रमित हो जाता हैं...!
बहकर वक्त की लहरों में,
न जाने कहाँ खो जाता हैं...!!,

वाजिब है सागर में लहर होना
और उसमें भी ताक़त होना,
मुमकिन भी है इस दुनिया मे
मानव सेवा का जज्बा होना,

छलकता है छिछला पानी
शांत समुंदर रहता है....!,
हर चमकने वांला तारा गगन में
ना सूर्य कभी बन पाता है...!!,

जो मानव के अधिकारों की
हर वक़्त सुरक्षा करते है,
इस पावन भूमि पर वो सेवक
फरिश्ता ही कहलाते है,

मजलूम के हाथों को थाम कर
दुखों पर मरहम लगायेंगे..!
भगवत गीता की शपथ लेकर
मानव अधिकार दिलाएंगे..!!

प्रफुल्लित रहे धरती पर मानव
यह उद्देश्य हमारा है,
हर मानव की सेवा करने का
हम ने मन में ठाना है,

■ **गोपाल कृष्ण व्यास**
अध्यक्ष-राज्य मानवाधिकार आयोग